मो0 रफी को भारत रत्न क्यों नहीं ?

विषयः **सुप्रसिद्ध पार्श्व गायक 'मो0 रफी साहब' के कार्यों के यथोचित मूल्यांकन के संदर्भ में।**

महोदय/महोदया,

पृथ्वी पर मानव के अभ्युदय के साथ ही अनेक सभ्यताओं एवं संस्कृतियों ने अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग समय में जन्म लिया। उन सभ्यताओं के दौरान विकसित विभिन्न कलाओं जैसे नृत्य एवं संगीत आदि के प्रमाण या तो लिखित रूप में उपलब्ध हैं या कहानियों एवं कल्पनाओं में। सभ्यताओं के विकास के प्रारंभिक समय में विज्ञान के विकसित न होने के कारण उन सभी लोगों का जिन्होंने किसी न किसी रूप में भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया, कोई दृश्य एवं श्रव्य प्रमाण उपलब्ध नहीं है। शायद यही कारण है कि सम्राट अकबर के नवरत्नों में से एक 'संगीत सम्राट तानसेन' की तानों की गूँज आज महज एक कल्पना तक ही सीमित है।

बीसवीं सदी में हुए विज्ञान एवं तकनीकी विकास के चलते विभिन्न व्यक्तियों द्वारा विभिन्न कला क्षेत्रों में दिए गए योगदानों को अब दृश्य एवं श्रव्य साधनों के माध्यम से आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना सुगम हो गया है।

यूँ तो इस युग के प्रारम्भ से भारतीयों ने अनेक आवाजों को सुना,परन्तु एक आवाज जिसने भारतीय जनमानस के दिलोदिमाग को झकझोर दिया और संगीत प्रेमियों की दुनिया में 'रोटी, कपड़ा और मकान' के बाद अगर जीवन की कोई बुनियादी जरूरत बनी तो वह थी 'मो0 रफी साहब' की आवाज।

पार्श्वगायन के सरताज 'मो0 रफी साहब' का महत्व आज केवल इसलिए नही है कि उन्हेंाने हजारों की संख्या में हर तरह के गीत गाए और अपने गीतों के जरिए जिन्दगी के विभिन्न पहलुओं की

अभिव्यक्ति की बल्कि इसलिए भी है कि सामाजिक, जातीय व धार्मिक संकीर्णताओं से ग्रसित इस दौर में वह 'इंसानियत, मानवीय मूल्यों, देश प्रेम, धर्मनिरपेक्षता एवं साम्प्रदायिक सद्भाव' के एक मजबूत प्रतीक हैं। उनके गाए गीत नैतिक , सामाजिक एवं भावनात्मक अवमूल्यन के आज के दौर में जनमानस को इंसानी रिश्तों, नैतिकता एवं इंसानियत के लिए प्रेरित कर रहे हैं। मो0 रफी साहब के निधन के कई वर्षों के बाद आज भी उनकी सुरीली आवाज का जादू लोगों के सिर चढ़ कर बोल रहा है।

'मो0 रफी साहब ' बड़े गायक थे या कोई और, इस विषय पर लोगों की अलग-अलग राय हो सकती है , लेकिन इस बात पर शायद ही कोई विवाद हो कि गायकों में तो क्या सम्पूर्ण कलाक्षेत्र की हस्तियों में साम्प्रदायिक सद्भाव, धर्मनिरपेक्ष और राष्ट्रीय अखण्डता का सबसे बड़ा प्रतीक अगर कोई है तो वह हैं 'मो0 रफी साहब'। लेकिन धर्मनिरपेक्ष होने का दावा करने वाली सरकारों एवं साम्प्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने का दावा करने वाले राजनीतिक दलों तथा सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों ने इस प्रतीक की अनदेखी कर दी। इनसे एक सवाल पूछने का मन करता है कि,साम्प्रदायिक एकता एवं धर्म निरपेक्षता के प्रतीक के रूप में उनके पास कौन-कौन से नाम हैं और क्या 'मो0 रफी साहब' के योगदान एवं भारतीय जनमानस पर उनका प्रभाव,अन्य नामों से किसी तरह कम है? अगर ऐसा नहीं है तो आखिर हर गली, चौराहे, संस्थान एवं हर प्रतिष्ठान को किसी न किसी के नाम से जोड़ देने वाले इस देश में कोई स्मारक, पुस्तकालय और कोई संस्थान 'मो0 रफी साहब' के नाम से स्थापित करने के विषय में अभी तक कोई पहल क्यों नहीं हुई?

मो0 रफी साहब के महत्व की उपेक्षा अनेक स्तरों पर अब तक होती आयी है। न तो सरकारी और न ही गैर सरकारी स्तर पर उनके योगदान का यथोचित मूल्यांकन हुआ और न ही उन्हें वह सम्मान दिया गया जिसके वह वाकई हकदार हैं। भारत सरकार ने केवल उन्हें 'पद्मश्री'

से सम्मानित किया जबकि उनके समकालीन गायक अथवा गायिकाओं में से कई को **'भारत रत्न'** एवं 'दादा साहब फाल्के पुरस्कार' जैसे सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। यह बात करोड़ो संगीत प्रेमियों की समझ से परे है। किसी गायक का मूल्यांकन एक गायक के रूप में हो, इसमें कोई दिक्कत नहीं है लेकिन साम्प्रदायिक सद्भाव में उनके योगदान की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए।

बात यहाँ 'भारत रत्न' या इससे ऊपर या कमतर पुरस्कार को उन्हें दिए जाने की नहीं है बल्कि कराड़ों लोगों को मलाल इस बात का है कि आज उनकी मृत्यु के लगभग 30 वर्ष बाद भी उनके कार्यों का न ही यथोचित मूल्यांकन किया गया और न ही उनके द्वारा किए गए साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखने के प्रयत्नों तथा भारतीय संगीत एवं संस्कृति को समृद्ध बनाने के उनके अतुलनीय योगदान को सराहा गया। यदि उनके कार्यों का यथोचित मूल्यांकन समय रहते न हुआ तो सम्पूर्ण भारतवर्ष उनके द्वारा की गयी संगीत सेवा के ऋ ण तले सदैव दबा रहेगा और प्रकृति की निगाह में संम्पूर्ण राष्ट्र उनके प्रति कृतघ्नता का कलंक कभी भी धो न पाएगा।

अतः भारतवर्ष एवं भारतीय संगीत में उनके अतुलनीय योगदान को देखते हुए सम्पूर्ण देश की जनता व सरकार का यह दायित्व बनता है कि **इससे पहले कि कोई अन्य देश उनके महत्व को समझ कर उन्हें पुरस्कृत करे,** हम सब भारत सरकार से अनुरोध करते हैं कि उनके कार्यों का यथोचित मूल्यांकन करके -

- उन्हें सर्वोच्च भारतीय पुरस्कार **'भारत रत्न'** से सम्मानित किया जाए।
- मो0 रफी साहब के नाम से राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का एक स्मारक,संगीत संग्रहालय एवं संगीत प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की जाए।

- मो0 रफी साहब के नाम से संगीत क्षेत्र में राष्ट्रीय पुरस्कार की घोषणा की जाए।